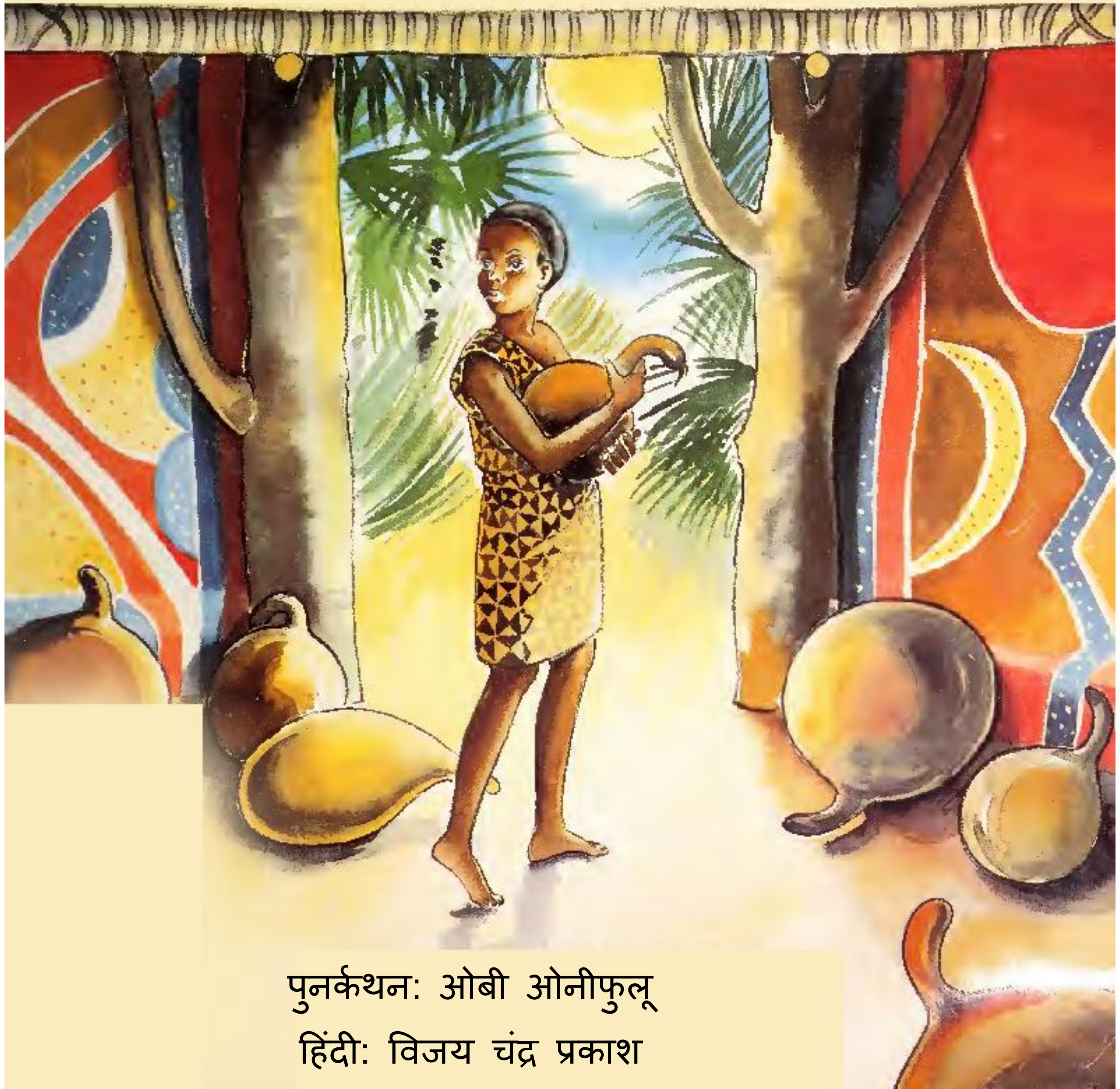
चिनये

एक पश्चिमी अफ्रीकन लोककथा



पुनर्कथन: ओबी ओनीफुलू
हिंदी: विजय चंद्र प्रकाश



चिनये

एक पश्चिमी अफ्रीकन लोककथा



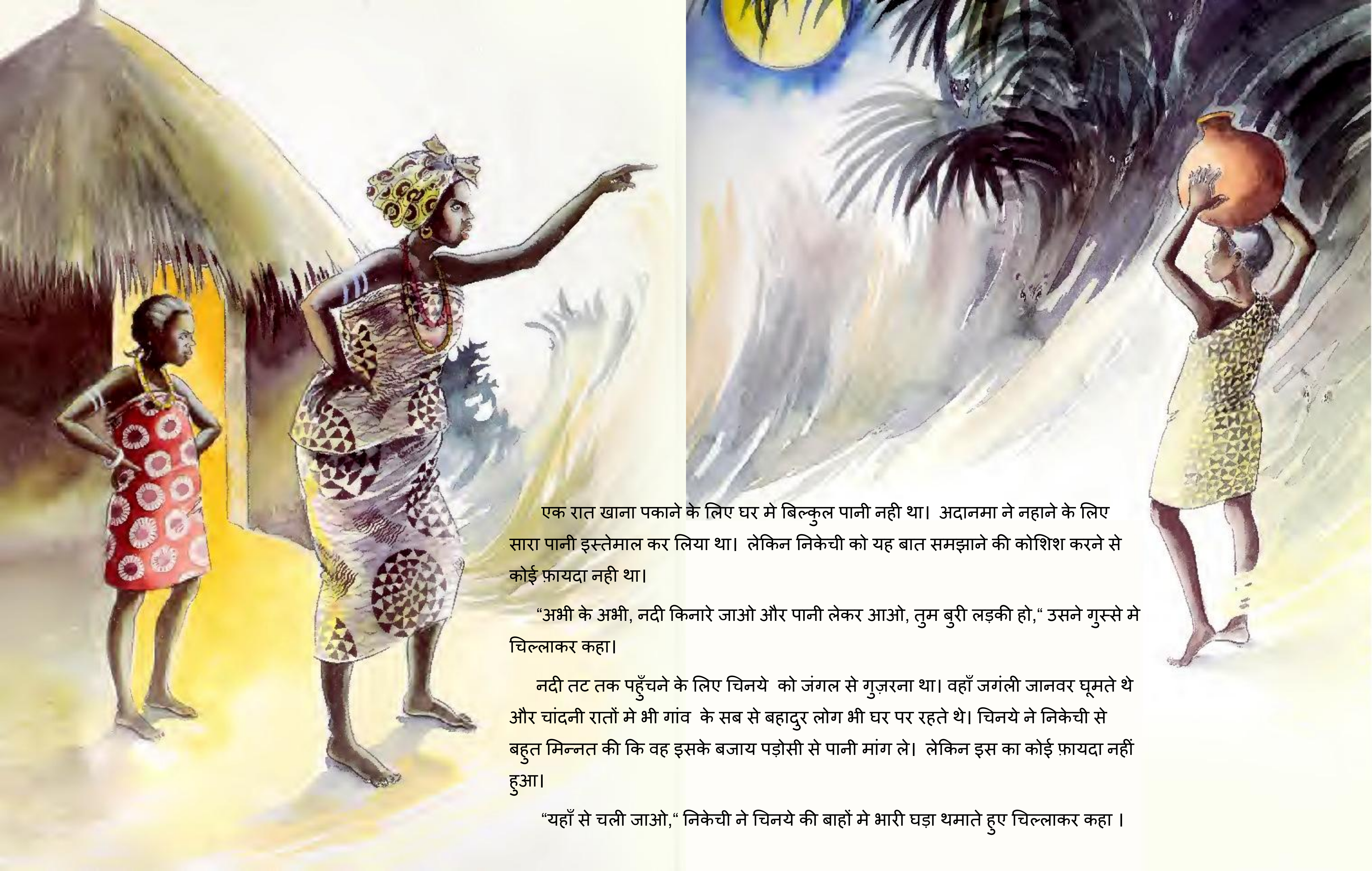
पुनर्कथन: ओबी ओनीफुलू
हिंदी: विजय चंद्र प्रकाश

बहुत समय पहले चिनये नाम की एक लड़की रहती थी। उसके माता पिता की मृत्यु हो चुकी थी, इसलिए वह अपनी सौतेली माँ, निकाची और सौतेली बहन, अदानमा के साथ रहती थी।

हर रोज़, निकाची, चिनये से घर का सारा काम करवाती और उसे पानी लाने के लिए बार-बार जंगल भेजती। चिनये एक शांत और आज्ञाकारी लड़की थी और निकाची को खुश करने के लिए जितनी ज्यादा मेहनत हो सके उतनी मेहनत करती थी। उसे अदानमा से कोई मदद नही मिलती क्योंकि वह एक बहुत बिगड़ी हुई और आलसी लड़की थी।





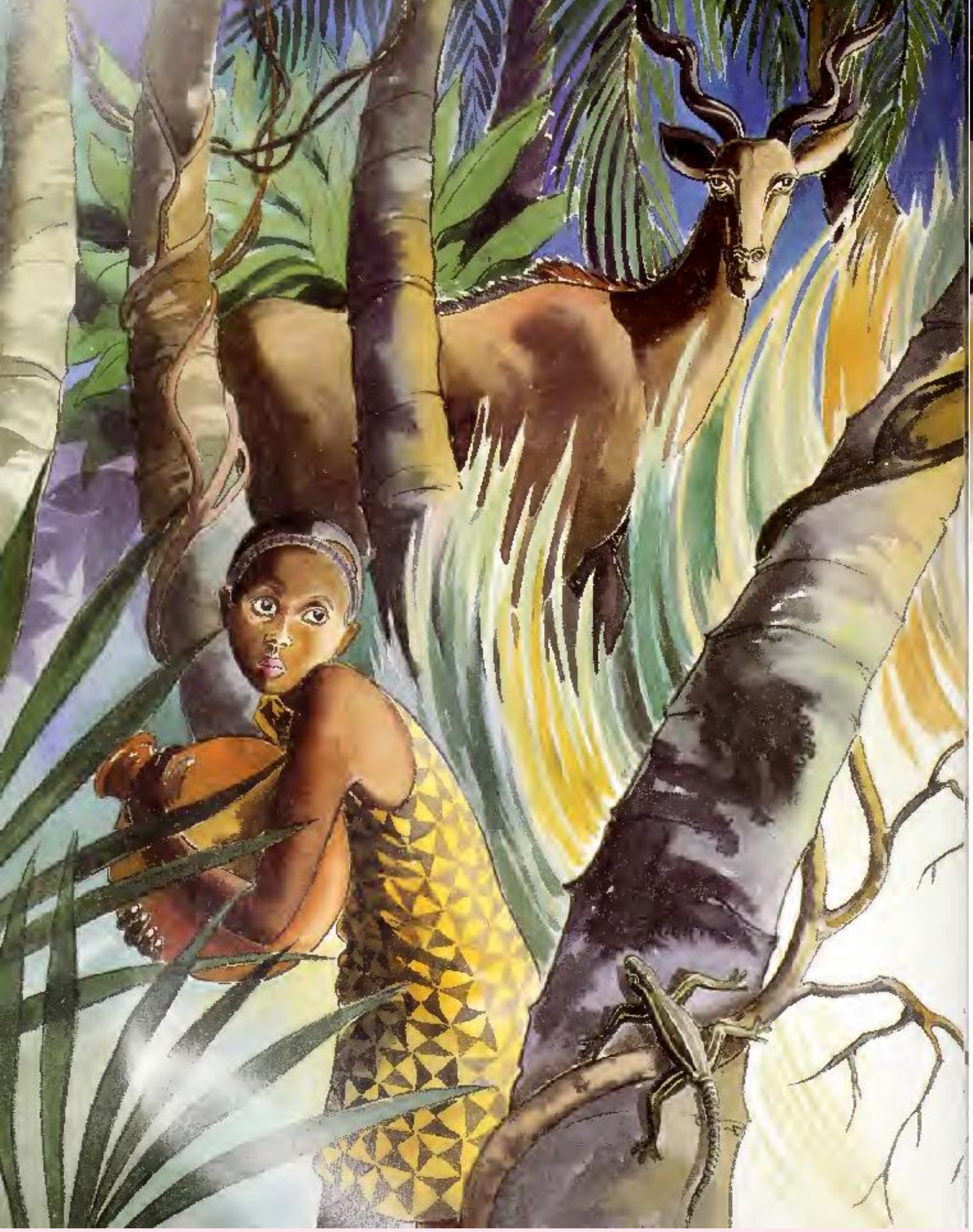


एक रात खाना पकाने के लिए घर मे बिल्कुल पानी नही था। अदानमा ने नहाने के लिए सारा पानी इस्तेमाल कर लिया था। लेकिन निकेची को यह बात समझाने की कोशिश करने से कोई फ़ायदा नही था।

“अभी के अभी, नदी किनारे जाओ और पानी लेकर आओ, तुम बुरी लड़की हो,“ उसने गुस्से मे चिल्लाकर कहा।

नदी तट तक पहुँचने के लिए चिनये को जंगल से गुज़रना था। वहाँ जगंली जानवर घूमते थे और चांदनी रातों मे भी गांव के सब से बहादुर लोग भी घर पर रहते थे। चिनये ने निकेची से बहुत मिन्नत की कि वह इसके बजाय पड़ोसी से पानी मांग ले। लेकिन इस का कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

“यहाँ से चली जाओ,“ निकेची ने चिनये की बाहों मे भारी घड़ा थमाते हुए चिल्लाकर कहा ।





रोती हुई चिनये जंगल की ओर चल पड़ी। हर पेड़ के पीछे खतरा छिपा था। एक शेर दहाड़ा और उसका दिल दहल गया। तभी उसके ठीक सामने रास्ते पर एक साया (आकृति) उभर कर आई। चिनये चीख पड़ी। वह इतनी डर गई थी कि वह भाग भी नहीं पाई। उस ने अपनी आँखें बदं कर ली और प्रार्थना करने लगी।

"बच्ची तुम कहाँ जा रही हो?" एक प्यारी आवाज ने पूंछा। चिनये को सुनकर अचरज हुआ और उसने ने आपनी ऑखे खोली। चाँदनी की रोशनी मे वह साया एक हिरण जैसा लग रहा था।

"झरने से पानी लेने," उसने फुसफुसाते हुए कहा।

आवाज ने कहा, "रात के इस समय जंगल तुम्हारे रहने लायक नही है, घर जाओ।" चिनये ने अपना सिर हिलाया, "मैं नही जा सकती। अपनी सौतेली माँ को गुस्सा दिलाए बिना ही मेरी जिंदगी पहले से ही बहुत बुरी है।"

उस साये ने एक ठंडी सांस भरी और चिनये को आगे जाने दिया।

थोड़ा और आगे जाने पर उसे एक दूसरा साया दिखाई दिया। यह एक लकड़बग्घे (हायना) जैसा लग रहा था। एक बार फिर चिनये चीख पड़ी और अपनी आँखे बंद कर ली। लेकिन उस जीव की आवाज प्रेम से और दयालुता से भरी हुई थी। यह सुनकर कि चिनये इतनी देर रात बाहर क्यों घूम रही थी उसने कहा, “मेरे आशीर्वाद के साथ अपने रास्ते पर आगे बढ़ो। लेकिन ध्यान रखना, एक शेर मेरा पीछा कर रहा है। इस पेड़ के पीछे छिप जाओ और उसके गुजर जाने तक, इंतजार करो।”

जब शेर चला गया तो चिनये पेड़ के पीछे से धीरे-धीरे बाहर निकली और तेजी से झरने की ओर गई। उस ने जल्दी से अपना मटका भरा और फिर जिस रास्ते से आई थी, उसी रास्ते पर भागने लगी।







अचानक उस के सामने एक बूढ़ी महिला दिखाई दी । वह उम्र के बोझ से झुकी थी । उस महिला ने चिनये की ओर हाथ बढ़ाया, मानो उसे थामना चाहती हो। उसने कहा, “भगवान तुम्हारा भला करे बच्ची। मेरी बात सुनो। जब तुम अपने रास्ते पर आगे बढ़ोगी तो तुम्हे एक झोपड़ी मिलेगी और ढोल नगाड़ो और गाने की आवाज सुनाई देगी। अंदर जाना, तुम्हे झोपड़ी का फर्श लौकियो से ढका हुआ मिलेगा, कुछ बड़ी, कुछ छोटी, कुछ शांत और कुछ शोर मचाती हुई। उनमे से एक तुम से कहेगी मुझे ले लो लेकिन उसे मत लेना,वह बुरी चीज़ों से भरी है।सब से छोटी और सब से शांत लौकी चुनना और जब तुम घर पहुंचो तो उसे जमीन पर पटक कर फोड़ देना। बूढ़ी महिला ने उसे फिर से आशीर्वाद दिया और गायब हो गई।







थोड़ी ही देर बाद वाकयी में चिनये को ढोल,नगाड़ो और गानो की आवाज सुनाई दी। रास्ते के किनारे,चाँदनी रात मे एक ऐसी झोपड़ी खड़ी थी जिसे उस ने पहले कभी नही देखा था। चिनये ने अपना पानी का मटका सावधानी से जमीन पर रखा और अंदर चली गई।

सब कुछ ठीक वैसा ही था जैसा उस बूढ़ी औरत ने बताया था। फर्श पर हर अकार और रुप के लौकी-कद्दू फैले हुए थे। उनमे से एक में से आवाज आई, “मुझे ले चलो !” लेकिन चिनये को उस बूढ़ी औरत की चेतावनी याद थी। वह ढूँढ ती रही जबतक उसे सबसे छोटा और शांत कद्दू नहीं मिला। उसने उसे को उठा लिया।



एक बार फिर वह बूढ़ी औरत की आकृति सामने आ गई। उस ने कहा, “तुमने बहुत समझदारी से चुना है। किस्मत तुम्हे जो कुछ भी दे उसका सही इस्तेमाल करना। उस ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और चिनये के गाल को प्यार से छुआ।

“अब शांति से घर जाओ मेरे बच्चे।”



निकेची झोपड़ी के दरवाजे पर उसका इंतजार कर रही थी। घूरते हुए उस ने कहा, “इतनी देर कहाँ लगा दी? और तुम्हारे हाथ मे क्या है?“ उस ने शकभरी नजरो से उस कद्दू की तरफ इशारा किया जो चिनये के में था।

“एक बूढ़ी औरत ने तुम्हे यह दिया है! इसके अन्दर क्या है?”

उस ने झपट कर उसके हाथ से कद्दू छीन लिया और जोर से हिलाया लेकिन उस में से कोई आवाज नही आई और फिर उसने उसे एक तरफ फेंक दिया।

वह चिल्लाकर बोली, “जल्दी करो और आग जलाओ। आज रात के खाने के लिए हम पहले ही बहुत इंतजार कर चुके हैं।”

इसलिए उस रात चिनये को उस कद्दू को फोड़ने का मौका ही नहीं मिला।









दूसरे दिन सुबह चिनये जल्दी उठ गई। निकेची और अदानमा गहरी नींद मे सो रहे थे। चिनये को कद्दू मिल गया और वह धीरे से बाहर निकली और अपने पिता की पुरानी झोपड़ी में गई और दरवाजा बन्द किया और कद्दू को जमीन पर जोर से पटक दिया।

अचानक वह खाली झोपड़ी एक खाजाने भरे घर मे बदल गई । सोने के गहने सारी जमीन पर फैले पड़े थे। और साथ मे हाथी दांत और कीमती जवाहरात और हर रंग के रेशमी कपड़े भी थे। चिनये अपनी आखें मलने लगी रही। फिर वह दौड़कर अपनी सौतेली माँ को जगाने गई।





जब निकेची ने उस खजाने को देखा तो अपने जीवन मे पहली बार वह दंग रह गई। यह सोचकर कि इतना बड़ा खजाना एक कद्दू से कैसे निकला। अदानमा को वह बूढ़ी औरत क्यों नही मिली।

“अहा!” निकेची की ऑखो मे लालच की चमक आ गई। शायद अभी भी ज्यादा देर नही हुई है।

उसी रात निकेची ने अपनी योजना को अंजाम दिया और अदानमा को घड़ा भरने के लिए झरने की ओर भेज दिया। रास्ते में उसे भी हिरण,लकड़बग्घा और वह बूढी औरत मिले। लेकिन चिनये के विपरित उसने बूढ़ी औरत की सलाह पर कोई ध्यान नही दिया। और जब वह झोपड़ी मे पहुंची और उस ने सब से बड़े कद्दू में से एक को कहते हुए सुना “मुझे ले लो,“ तो उस ने ठीक वैसा ही किया।

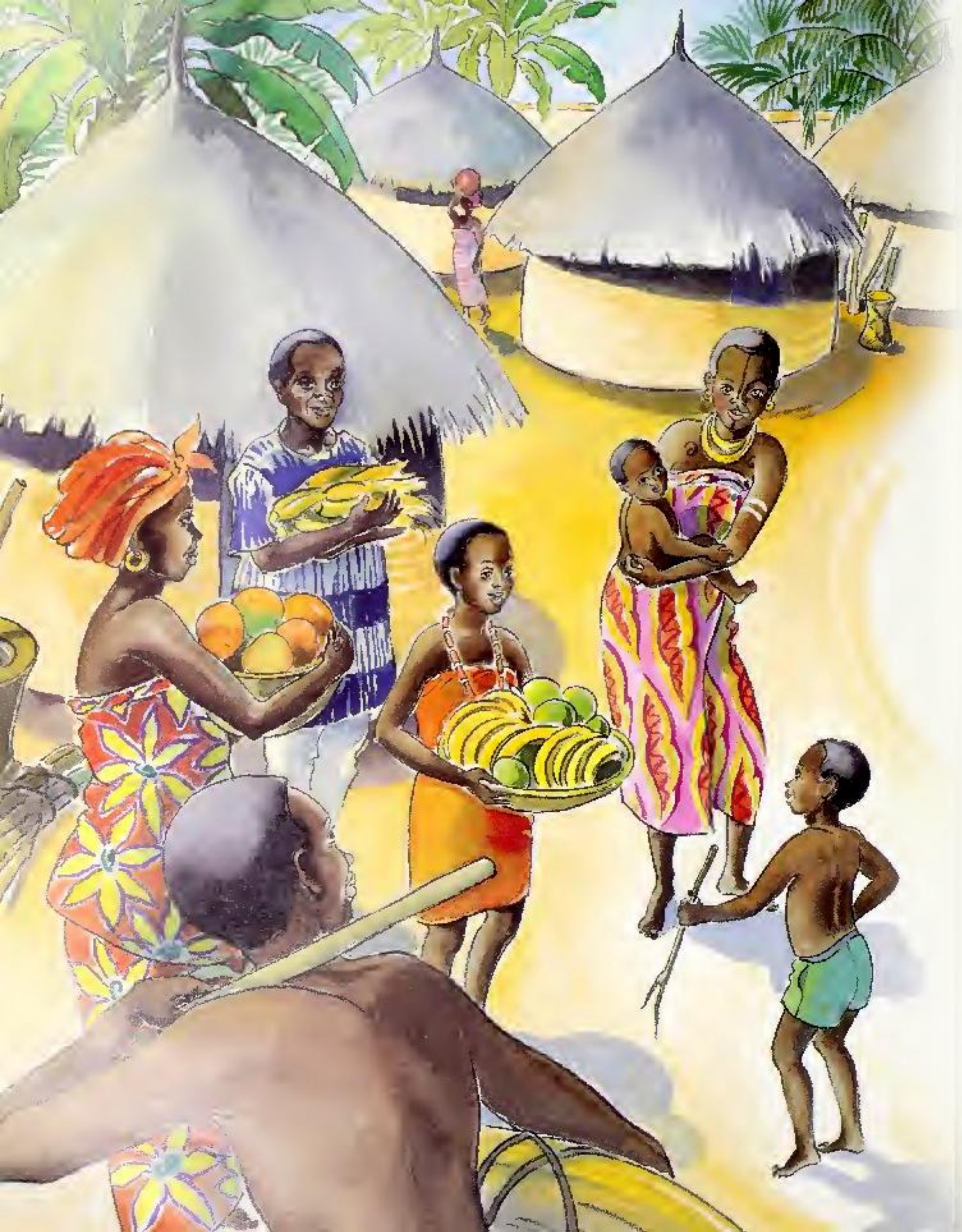


अपने घर पहुंच कर उसने गर्व से कहा “देखो माँ। मैने जितना बड़ा कद्दू मिल सकता था उतना बड़ा चुना।”

निकेची ने खुशी से अपने हाथ रगड़े। कद्दू जितना बड़ा होगा, खजाना उतना ही बड़ा होगा और “हम अमीर हो गए, हम अमीर हो गए “ कहते हुए उसने अदनामा के हाथ से छीना और जमीन पर पटक दिया।

अचानक बिजली चमकी और बादल गडगडाऐ।निकेची और अदानमा चीख पड़ी और डर के मारे एक-दूसरे से लिपट गई। एक भयंकर बवंडर उठा और उनका सारा सामान समेट कर खिडकी से बाहर फेंक दिया - उनके बर्तन, कपड़े और कौड़िया सब रात के अंधेरे मे गायब हो गई। निकेची और अदानमा अपना सब कुछ खो चुकी थी।





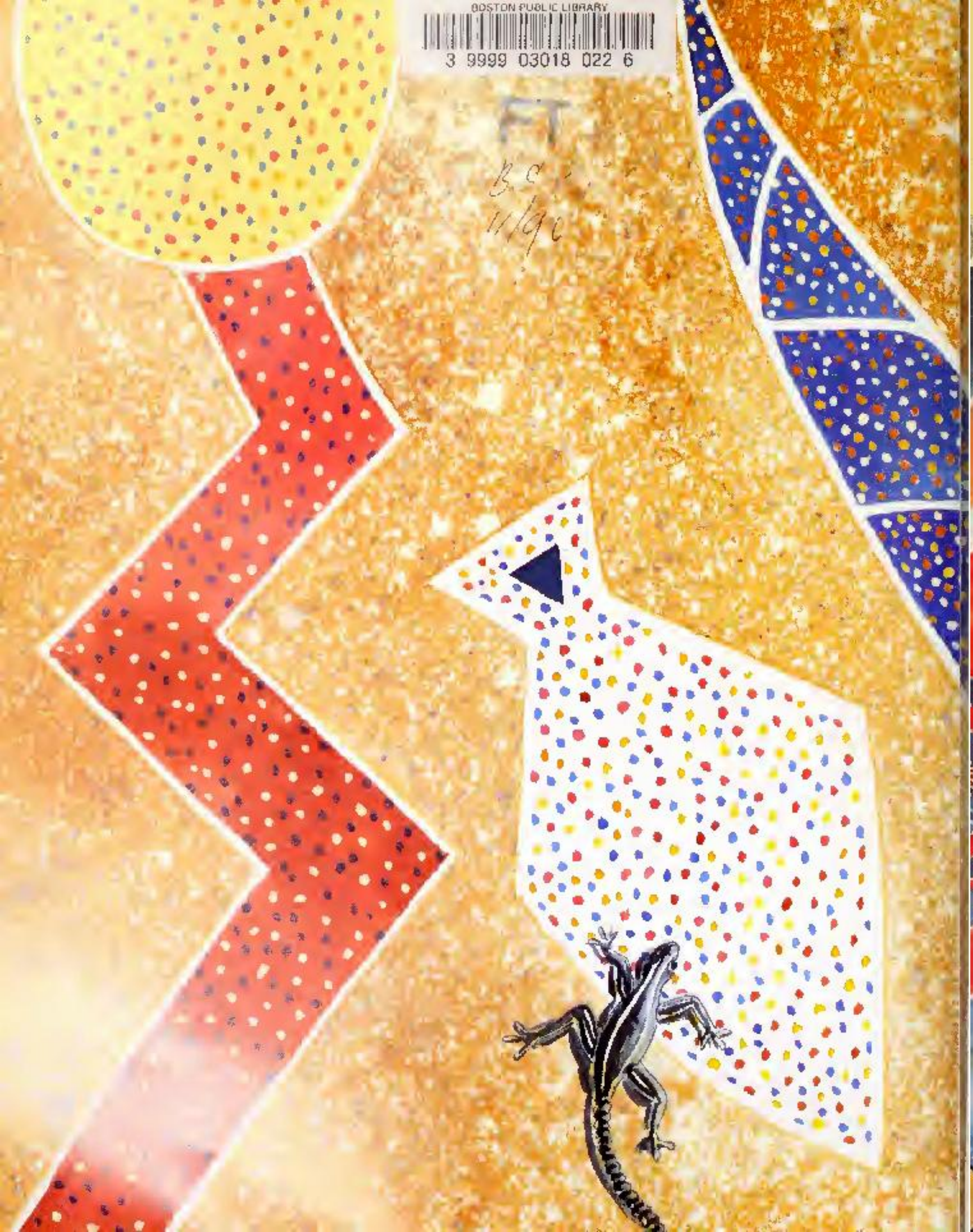


वो बहुत अहंकारी थी इसलिए उन्होंने चिनये से कोई मदद नहीं माँगी ।

निकेची अदानमा को साथ लेकर हमेशा के लिए गांव छोड़कर चली गई।

और चिनये ने अपनी सम्पत्ति का उपयोग अपने गांव के लोगो की मदद के लिए उपयोग किया और सदा खुशी-खुशी रहने लगी।






Ages 5-up